डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
एस-सीरीज
अप्सरा
साधना

अप्सरा साधना

आशीर्वाद
डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

एस-सीरीज

संकलन एवं सम्पादन
श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - ३४२ ००१ (राज.)
फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010

द्वितीय मुद्रण	:	होली 1999
मूल्य	:	15/-
मुद्रक	:	आर.एस. ऑफसेट प्रिंटर्स, B-103/4, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1 नई दिल्ली - 28

पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

* यह जो मोहलत जिसे कहें है उम्र
देखो तो इन्तज़ार सा रहता है कुछ
* इंतजार! सभी को बना रहता ही है कोई न कोई
इन्तजार! पर किसका, यह खुद ही पता नहीं।
* बस इन्सान को नहीं, फूल, पौधे, सबा, दरिया, पर्वत
सभी को रहता है कोई इन्तज़ार . . .
* जानते नहीं इसके बाबत या कि भुला दिया है कुछ?
या कि डाल लिए है मन पर सौ-सौ पर्दे कि न तो
भीतर की दुर्गन्ध बाहर जा पा रही है और न
बाहर की सुगंध भीतर आ पा रही है?
* जो सुगंध है सौन्दर्य की, हुस्न की, अदा की,
इसरार की, इककार की, मनुहार की, अठखेलियों
की, इशारों की, शरारतों की . . .
* या एक शब्द में कहें तो अप्सरा की!
* क्योंकि वही तो होती है सौन्दर्य की
जीवित जाग्रत धड़कती हुई कोई रचना . . .
* बस धड़कती हुई ही नहीं, धड़काती हुई भी तो!
* खुद ही धड़क कर, थिरक कर, भीग कर,
भिगो कर कुछ का कुछ अनुभव कर लीजिए न!
आपके लिए ही तो रची गई है यह कृति।
* कि उम्र ने जो मोहलत दी है वह सरसब्ज,
हसीन और रंगीन हो चले . . .

उर्वशी के साथ तीन दिन

देवताओं का स्वर्ग कानन वन है, तो पृथ्वी का स्वर्ग मानसरोवर। विशाल प्राकृतिक झील, जिसका पानी बिल्लोरी शीशे की तरह चमकदार, पारदर्शक और स्वच्छ है, जिसकी तलहटी पर यदि कोई मोती भी पड़ा हो तो ऊपर से साफ-साफ दिखाई देता है, जिसके चारों ओर उच्च कोटि के पुष्प विकसित हैं, जैसे हिमालय ने अत्यन्त ही मधुरता के साथ अपना श्रृंगार किया हो। ऐसा लगता है, जैसे हिमालय ने अपनी पूर्ण निधि वहां बिखेर दी हो, प्रकृति ने दोनों हाथों से अपने आपको लुटा दिया हो।

इसके साथ ही साथ यह स्थान साधना की दृष्टि से भी अद्वितीय और मनोहर है। प्राचीनकाल से ही उच्चकोटि के योगी और साधक यहां तपस्या करने आते रहे हैं, यहां का कण-कण उन उच्च कोटि के योगियों और तपस्वियों से मुखरित है, जिन्होंने यहां बैठकर तपस्या की है। यहां के चप्पे-चप्पे पर देवताओं और सिद्धों के पदचाप हैं, यहां के कण-कण पर लामाओं और साधकों की साधनाओं के मंत्र सुभासित हैं। वास्तव में ही वे मनुष्य धन्य है, जो अपने पांवों से मानसरोवर तक जाते हैं, इसके मधुर शीतल जल में स्नान करते हैं और यहां की प्रकृति से अपने आपको एकाकार कर पाने में समर्थ होते हैं।

मानसरोवर से उत्तर में पुराणों में वर्णित कैलाश पर्वत है, जो सफेद निर्मल बर्फ का मुकुट पहने हुए गौरवमय दिखाई देता है। दूर से, मानसरोवर के तट से कैलाश पर्वत को देखने पर वह पर्वत दिखाई नहीं देता अपितु ऐसा प्रतीत होता है मानों साक्षात शंकर ही ध्यानस्थ बैठे हों, उनके सिर की श्वेत लम्बी जटाएं, चारों ओर से गंगा एक-एक बूंद ढुलक कर नीचे आती हुई अद्भुत और

आश्चर्यजनक . . . अद्वितीय और मनोहारी है यह कैलाश पर्वत और इसके आसपास की भूमि। यहां सैकड़ों गुफाएं और कन्दराएं हैं, जहां तिब्बत के उच्च कोटि के लामा साधना करते रहते हैं, ऐसे शीतल वातावरण में भी महायोगी विचरण करते हुए, साधना करते हुए और ध्यानस्थ बैठे दिखाई दे जाते हैं।

भगवान शिव के शब्दों में जो मानसरोवर व कैलाशपर्वत के आस-पास साधना करता है उसे जीवन में और उस साधना में अवश्य सफलता प्राप्त होती है, क्योंकि उसे अनायास और अप्रत्यक्ष रूप से भगवान शिव का वरदान प्राप्त होता रहता है।

सिद्धाश्रम के योगियों के लिए तो यह भूमि अत्यन्त प्रिय स्थली रही है, जहां बारी-बारी से उच्च कोटि के योगी आते हैं, और महत्वपूर्ण साधनाएं सम्पन्न कर सिद्धाश्रम लौट जाते हैं। यहां पर कभी भी किसी भी समय सिद्धाश्रम के उच्च कोटि के योगी विचरण करते हुए या साधना करते हुए देखे जा सकते हैं।

पृथ्वी पर दो ही स्वर्ग हैं, पहला सिद्धाश्रम और दूसरा मानसरोवर के निकट **'कानन-शिला'**। यह शिला श्वेत स्फटिक पत्थर की है, जो लगभग आधी मील लम्बी और इतनी ही चौड़ी है। यह कुदरत का करिश्मा ही है, कि बाकी सारे पहाड़ और पत्थर भूरे रंग के हैं, वहां यह एक मात्र इतनी लम्बी चौड़ी शिला दुग्ध धवल स्फटिक की है। ऐसा लगता है जैसे इन्द्र ने स्वयं नन्दन कानन से इस शिला को लाकर यहां हौले से रख दिया हो।

संसार की यह एकमात्र बिना जोड़ की शिला है, जो इतनी लम्बी चौड़ी भी है, साथ ही इसके ऊपर का धरातल चिकना, पारदर्शी और स्वच्छ है। योगियों ने इस शिला को **'कानन-शिला'** कहा है। इस शिला की यह विशेषता है कि यह मरकत स्फटिक शिला है और इस पर बैठने से व्यक्ति को भूख, प्यास, निद्रा, सर्दी, गर्मी आदि का कोई प्रभाव व्याप्त नहीं होता, साधक आनन्द पूर्वक बिना किसी प्राकृतिक बाधा के अपनी साधना सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

पिछले वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर योगिराज भृगु महाराज ने अलग-अलग योगियों को अलग-अलग कार्य सौंपे, उनमें से महायोगी विज्ञानानंद को ब्रह्मांड साधना सम्पन्न करने की आज्ञा दी, जिससे कि इस साधना के रहस्य का पता लगाया जा सके, और अन्य साधक उसके प्रकाश में यह साधना सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकें।

ब्रह्मांड साधना अत्यन्त उच्चकोटि की महत्वपूर्ण साधना है, जिसे

भारतवर्ष के बहुत ही कम योगियों ने सिद्ध किया है। इस साधना को सम्पन्न करने पर साधक इंद्र के समान महत्वपूर्ण बन जाता है और उसे ब्रह्मांड की समस्त सुख-सुविधाएं प्राप्त हो जाती हैं।

उस समारोह में सिद्धाश्रम के समस्त साधक और योगी उपस्थित थे। इतनी महत्वपूर्ण साधना के लिए स्वामी विज्ञानानन्द का चयन स्वाभाविक था। वे वास्तव में ही अत्यन्त उच्चकोटि के योगी हैं और उन्होंने आज के युग में साधना के द्वारा जो कुछ प्राप्त किया है, जिस स्तर पर पुहंचे हैं, वह सम्माननीय और श्रद्धास्पद है।

उच्च कोटि के योगी होते हुए भी वे स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के प्रति असीम श्रद्धा रखते हैं। स्वामी निखिलेश्वरानंद जी ने कहा, तुम्हें जीवन का एक सौभाग्य प्राप्त हुआ है, तुम्हें अवश्य ही मानसरोवर के तट पर 'कानन-शिला' पर बैठकर इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए, जिससे सफलता में किसी प्रकार की कोई न्यूनता न रहे। उन्होंने हौसला बढ़ाते हुए कहा, मैंने स्वयं उसी शिला पर यह साधना सम्पन्न की थी फिर उन्होंने साधना के मार्ग में आने वाली बाधाओं को समझाया, और कहा — "आपके साथ मैं स्वामी गिरिराज को भेज रहा हूं, यह आपकी सेवा करेंगे, आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें, पूरे प्रयत्न के साथ साधना में बैठें, गुरुदेव की कृपा से आप अवश्य ही सफलता प्राप्त करेंगे।"

मेरे लिए तो यह आकस्मिक वरदान था, मैं तो निखिलेश्वरानंद जी के चरणों में बैठकर अपने जीवन को धन्य और सार्थक कर रहा था। मुझे ज्ञात नहीं था कि ऐसी महत्वपूर्ण साधना में मुझे भी सहयोगी बनने का अवसर मिलेगा। जब निखिलेश्वरानंद जी ने मेरी तरफ संकेत कर कहा कि स्वामी गिरिराज को आपके साथ भेज रहा हूं, तो मेरा रोम-रोम पुलकित हो गया। विज्ञानानंद ने एक क्षण के लिए मेरी तरफ देखा और अपने साथ चलने की अनुमति प्रदान कर दी।

कानन शिला मैंने अपने जीवन में पहली बार देखी थी, इसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया, यह प्रकृति का बेजोड़ और अद्वितीय वरदान है। जब मैंने पहली बार इस शिला को हौले से स्पर्श किया, तो मेरे सारे शरीर में एक विद्युत प्रवाह सा दौड़ा था। वास्तव में यह शिला मंत्र सिद्ध है, उच्च कोटि के योगियों और साधकों के द्वारा इस पर साधना करते रहने की वजह से यह दिव्य और अनुपम बन गई है। यह शिला अपने आप में ही सिद्ध पीठ बन गई है और इस पर बैठते ही व्यक्ति को जो सुख और आनन्द अनुभव होता है, उसकी समता इस विश्व में कहीं पर नहीं है।

वास्तव में ही विज्ञानानंद उच्चकोटि के महायोगी हैं। उस कानन शिला

पर बैठकर जिस प्रकार से वह अकम्पित साधनारत हुए, वह वास्तव में ही सराहनीय था। यह साधना तीस दिन की थी और मैंने देखा कि पच्चीस दिन बीतने पर भी वे ज्यों के त्यों ध्यानस्थ रहे, न तो उन्होंने एक बार आंखें खोलीं और न इस पूरी अवधि में एक बार उनके शरीर में कोई कम्पन ही हुआ, वे निश्चल भाव से जिस आसन पर बैठे थे, उस पर बराबर बैठे रहे, होठों से ही स्फुट-अस्फुट ध्वनि नि:सृत हो जाती थी, इसके अलावा किसी प्रकार का कोई कम्पन उनके पूरे शरीर पर व्याप्त नहीं था। इस प्रकार से ध्यानस्थ होना उच्चकोटि के योगियों के लिए ही सम्भव है।

मैं नित्य प्रात:काल उषाकाल में मानसरोवर के तट पर जाकर स्नान करता और वापस आकर कानन शिला पर बैठ अपनी दैनिक साधना, पूजा-पाठ सम्पन्न करता। इसके अतिरिक्त मेरा और कोई कार्य नहीं था, पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानंद जी की आज्ञा थी कि साधनाकाल में उनके पास बने रहना है, इसलिए बाकी सारा समय मैं उनके पास बैठा रहता और चकोर की तरह उनके तेजस्वी चेहरे को एकटक ताकता रहता। मुझे वह वातावरण, वह स्थल, वह साधना सब कुछ पवित्र, दिव्य, मनोहारी और अवर्णनीय प्रतीत होता, वास्तव में ही मैं इस अवधि में अपने आपको रोमांचित और धन्य अनुभव कर रहा था।

लगभग छब्बीस दिन बीत गए थे, अब तो मात्र चार दिन ही बाकी थे, आकाश में बादल छाये हुए थे, कुछ ही समय पहले वर्षा होने की वजह से पूरी प्रकृति धुल गई थी। मैं स्नान करके कानन शिला पर आकर बैठा ही था, कि तभी 'छन्न' की आवाज आई और मेरी एकाग्रता टूट गई, सामने देखा तो देखता ही रहा गया, स्वामी विज्ञानानंद के ठीक सामने लगभग पांच सात फीट की दूरी पर एक अनिन्द्य अद्वितीय सुन्दरी खड़ी थी। उस निर्जन वन में यह सुंदरी कहां से और किस तरफ से आयी? किस प्रकार से इस शिला पर अचानक दिखाई दी, मैं कुछ भी अनुमान नहीं लगा सका। यदि निश्छल भाव से कहूं तो मैं उस सुन्दरी के रूप और सौंदर्य के सामने स्तम्भित सा हो गया था। एक बार तो मेरे पूरे शरीर का खून उफन कर शरीर में जोरों से चक्कर लगाने लगा, मैं अपने आप पर नियंत्रण नहीं कर पा रहा था, मैं समझ नहीं पा रहा था कि यह कौन है, कोई अप्सरा या रति है, या कोई पिशाच या राक्षस योनि ऐसा छल युक्त रूप धारण कर उपस्थित हुई है। उस क्षण मैं कुछ भी सोचने विचारने लायक नहीं रह गया था, और मेरी आंखें अपलक एकटक उसके चेहरे पर गड़ी हुई थीं, जो कि मुझ से मात्र सात-आठ फीट की दूरी पर खड़ी थी।

उसकी सुंदर देह यष्टि के सामने पुराणों में वर्णित सारा सौंदर्य वर्णन व्यर्थ सा प्रतीत हो रहा था। पहली बार मेरा मन अनियन्त्रित हुआ, पहली बार मैं अपने आप पर काबू न पा सका, पहली बार मेरे ऊपर कामुकता की हल्की सी परत अनुभव हुई, पहली बार उसे प्राप्त करने, उसके पास बैठने और उससे बातचीत करने की इच्छा जागृत हुई।

मैंने अपने आपके ऊपर काबू किया और प्रयत्न कर अपने आपको संयत करने की कोशिश की और उसकी तरफ देखा, मुझे चैतन्यावस्था में अनुभव कर और सामान्य संयत देखकर वह रूपसी हौले से मुस्करा दी, उस एक मुस्कराहट के सामने चारों ओर बिखरी हुई प्रकृति श्रीहीन और फीकी सी लग रही थी, उस एक मुस्कराहट पर हिमालय तो क्या सारे संसार का वैभव न्यौछावर था।

चैतन्य होकर मैंने गहरी और सार्थक निगाहों से उसे देखा, लगभग बीस-इक्कीस वर्ष की सुंदर, स्वस्थ, यौवन की आभा से दीप्त तरुणी मेरे सामने खड़ी थी। अण्डाकार सुंदर चेहरा, यौवन, प्रेम और सौन्दर्य से गुलाबी हो रहा था, उस पर गहरी झील सी नीली आंखें अद्वितीय दिखाई दे रही थीं, होंठ ऐसे प्रतीत हो रहे थे, माना दो गुलाबी पंखुड़ियों को एक दूसरी पर रख दिया हो और चिबुक के छोटे से गड्ढे में समस्त संसार का यौवन कूद पड़ने के लिए आतुर था, हंसिनी ग्रीवा और उन्नत, उभरे हुए वक्ष ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो दो ऋषि खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य दे रहे हों। वक्षस्थल पर कस कर कंचुकी बंधी हुई थी, और नाभि के नीचे नील वर्णीय परिधान पहना हुआ अत्याधिक आकर्षक और स्वप्निल अनुभव हो रहा था, हस्ती सुण्ड की तरह जंघाएं और पायलों में छोटे-छोटे घुंघरु बंधे होने की वजह से पैर अत्यधिक आकर्षक और सुंदर लग रहे थे, सिर के बाल लम्बे और पीछे जंघाओं को छू रहे थे, यौवन भार से झुका हुआ उसका शरीर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो कामदेव अपनी प्रत्यंचा को टेढ़ी कर पूरे विश्व पर विजय प्राप्त करने के लिए आतुर हो। अनिन्द्य सुंदरी के उस रूप, यौवन और मधुरता की त्रिवेणी में स्नान कर मैं अपने आपके ऊपर नियंत्रित नहीं कर पा रहा था, शायद विधाता ने बहुत ही फुरसत के क्षणों में उसके एक-एक अंग को गढ़ा होगा। अत्यधिक गौर वर्ण और उस पर लज्जा का गुलाबी आवरण चढ़ा हुआ ऐसा लग रहा था, मानो प्रात:कालीन उषा ने चारों ओर गुलाल बिखेर दी हो, उसकी एक-एक मुस्कराहट पर सौ-सौ स्वर्ग और कानन वन न्यौछावर थे। निश्चय ही वह अनिन्द्य और अद्वितीय सुन्दरी थी, जिसकी समानता इस पृथ्वी पर न तो सम्भव थी, और न है।

मैं अभी तक अपलक उस सौन्दर्यशालिनी को देख रहा था, समझ नहीं पा रहा था कि मैं इस नवागन्तुका अतिथि की कैसे अभ्यर्थना करूं, क्या कहूं, कैसे कहूं? तभी गुलाबी पंखुड़ियों में हल्का सा कम्पन हुआ, उसने अपना परिचय देते हुए कहा – "मैं इन्द्र साम्राज्य की नृत्यांगना उर्वशी हूं, मेरे मन में स्वामी विज्ञानानंद छा गए हैं और मैं इनकी साधना पर मुग्ध हूं, मैंने इन्द्र साम्राज्य छोड़ दिया है, क्योंकि मेरे चित्त पर तो विज्ञानानंद की तपस्या और श्रेष्ठता हावी हो गई है, मैं इन्हें वरण करने के लिए कटिबद्ध हूं।"

योगी और सुंदरी . . . सुंदरी और योगी . . . एक आश्चर्य है, इन दोनों का समन्वय कैसे सम्भव है? और फिर विज्ञानानंद तो उच्चकोटि के साधक हैं, वह इस रूपसी उर्वशी का वरण करें, यह सर्वथा असम्भव प्रतीत हो रहा है, पर इसमें इसका भी क्या दोष? यह तो बेचारी अपने दिल के हाथों मजबूर है, इसके चित्त पर तो विज्ञानानंद का आर्कषण हावी हो गया है, तभी तो उसने इन्द्र का साम्राज्य छोड़ा है, तभी तो यह समस्त सुख-सुविधाओं, भोग और ऐश्वर्य को छोड़कर इस निर्जन जंगल में अपने प्रणय के सामने आई है, तभी तो यह स्वर्ग को छोड़कर मनुष्य लोक में हमेशा-हमेशा के लिए जुड़ जाने के लिए उपस्थित हुई है, पर विज्ञानानंद जी से कौन कहे, मेरे लिए तो यह सर्वथा असम्भव है, मैं तो ऐसी बात होठों पर ला ही नहीं सकता।

मैं अब तक उस तरफ अपलक देख रहा था, उसके मुंह से निकले हुए शब्द मेरे अंतर को मथ रहे थे, मेरे सारे शरीर को और अंतरमन को उसके शब्दों ने आलोड़ित-विलोड़ित कर दिया था, सचमुच ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसके मुंह से अमृत की फुहार बरस गई हो और उससे मेरा सारा शरीर तन, मन, प्राण और अंतर भीग कर अनिवर्चनीय आनन्द से ओतप्रोत हो गया हो।

मैंने कहा, – 'आप उर्वशी हैं, अनिन्द्य और अद्वितीय सुंदरी, चिरयौवनमय, अविवाहिता अप्सरा, आपको प्रणय निवेदन करने का अधिकार है, पर मैं आपके संदेश को स्वामी तक नहीं पहुंचा सकता, वे ध्यानस्थ हैं, चार दिन बाद जब वे चैतन्य होंगे तब आप अपनी बात उनके सामने रख सकती हैं।'

उसने गहरी और सार्थक निगाहों से मुझे देखा और दूसरे क्षण उसके पैरों में कम्पन आरम्भ हुआ, उन घुंघरुओं की झंकार से सारा वन प्रांत मुखरित और सुवासित हो उठा, 'छूम् छनन् छन छनन्' की ध्वनि से सारा हिमालय हजार-हजार मुंह से बोलने लगा। धीरे-धीरे मैंने देखा कि उसके पैरों में गति आ रही है, वह नृत्य की भाव-भंगिमा

के द्वारा शायद स्वामी विज्ञानानंद की समाधि तोड़ने का निश्चय कर चुकी है। मुझे सारे पुराण एकबारगी याद हो आए। उर्वशी ने तो विश्वामित्र और पराशर जैसे ऋषियों की समाधि तोड़ दी थी और आज यदि नृत्य के माध्यम से स्वामी विज्ञानानंद की एकाग्रता और ध्यान को तोड़ दे तो इसमें आश्चर्य क्या? उर्वशी को अपनी बात कहने का, प्रणय निवेदन करने का अधिकार है, और यदि संभव हुआ तो मैं इसे इसके अधिकार को दिलाने में अवश्य ही सहायक बनूंगा।

मैं पुनः चैतन्य हुआ और देखा कि उस स्फटिक शिला पर सुन्दरी उर्वशी के सुकोमल पैर गतिशील है, घुंघरुओं की लयबद्ध ध्वनि पूरे वातावरण में मुखरित हो रही है, धीरे-धीरे पैरों की गति, उसकी चपलता और चंचलता बढ़ रही है, अवश्य ही प्रकृति स्वयं उर्वशी के साथ है, तभी तो इस नृत्य के साथ-साथ पृष्ठभूमि में वाद्य ध्वनि झंकृत हो रही है, तभी तो सारी प्रकृति सांस रोक कर इस अद्भुत और अद्वितीय नृत्य को देख रही है, तभी तो यह सारी फिजां, यह सारा वातावरण अचानक सुगन्धित और सुवासित हो उठा है।

पैरों की गति बढ़ गई थी, पता नहीं पड़ रहा था कि कब पैर उठ रहे हैं, और कब पैर शिला को छू रहे हैं, एक विशेष लय के साथ उसके दोनों पैर गतिशील थे, और घुंघरुओं की छनछनाहट के साथ लयबद्ध नृत्य मुखरित हो रहा था। एक विशेष मुद्रा, एक विशेष लोच, एक विशेष भंगिमा के साथ सारा शरीर नृत्य में गतिशील होना, मुद्रा प्रदर्शन करना और चपलता के साथ नृत्य युक्त होना आश्चर्यजनक था, अद्वितीय था, अवर्णनीय था।

कब दिन ढला कब सांझ हुई पता ही नहीं चला, उसके सुंदर गोरे ललाट पर पसीने की बूंदें चू रही थीं, स्वेद से कंचुकी भीग कर शरीर से चिपक गई थी, नाजुक और गोरे पैर अभी तक लयबद्ध नृत्य हेतु गतिशील थे, परंतु न उर्वशी रुक रही थी, और न स्वामी विज्ञानानंद चैतन्य हो रहे थे, इतने समय तक नृत्य करने से पत्थर भी अपनी आंखें खोल देता, इन्द्र भी विचलित हो जाता पर विज्ञानानंद अभी भी ध्यानस्थ थे, अभी तक भी निश्चल, अकम्पित आसन पर स्थिर थे।

धीरे-धीरे रात्रि हुई, चन्द्रमा ने कुछ समय पहले ही आकाश में आकर उस दृश्य को देखने का सफल-असफल प्रयास किया, परंतु अब उर्वशी पूर्ण रूप से थक कर चूर होकर उसी शिला पर पर विज्ञानानंद के सामने बैठी हुई भी , उसका चेहरा उदास था, जैसे कि किसी सद्यस्नात गुलाब पर ओस की परत जम गई हो, मन ही मन वह झुंझला रही थी, शायद उसे स्वप्न में भी गुमान नहीं था, कि उसका सौन्दर्य इस

प्रकार से पराजित प्रताड़ित हो जाएगा, फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी थी, जिसने भी उसको इस कार्य के लिए भेजा था, उसके प्रति वह विश्वसनीय थी, वह उसी प्रकार सौन्दर्य की साक्षात् स्वर्ण राशि बनी वहीं बैठी रही, और अपलक नेत्रों से स्वामी विज्ञानानंद को निहारती रही।

लगभग चार बजे प्रातः वह न जाने कहां अदृश्य हो गई, मैं भी उठकर मानसरोवर के तट पर पहुंचा और मल मल कर स्नान किया। मेरा सारा शरीर ताप से फुंक रहा था, स्नान करने पर मुझे शीतलता अनुभव हुई। कितने समय तक पानी में घुसा रहा, कुछ पता नहीं चला। सूर्य की पहली किरण के साथ मैं कानन शिला पर पहुंचा, तो विज्ञानानंद निश्चल भाव से ध्यानस्थ बैठे हुए थे।

लगभग आठ साढ़े आठ बजे वह फिर आई परंतु आज उसकी शोभा सौ-सौ गुनी ज्यादा थी। नाभिदर्शना सुन्दरी उर्वशी ने अपना श्रृंगार आज जी भर कर किया था, कंचुकी आज और ज्यादा कस गई थी, सिर पर से लेकर धानी वस्त्र घुटनों तक पहना हुआ था, सब कुछ नया-नया खिला महक रहा था। उसके शरीर से विशेष भीनी महक मैं अनुभव कर रहा था, उसने सर्वप्रथम स्वामी विज्ञानानंद को प्रणाम किया और कुछ क्षणों तक सामने बैठी रही।

मैं उससे बहुत कुछ पूछना चाहता था, पर मेरे मुंह से बोल निकल नहीं पा रहे थे, यह तो पता चल गया था, कि वह देव अप्सरा उर्वशी थी, पर यहां क्यों आई है, क्यों इतना परिश्रम कर रही है, किसने उसे, किस विशेष उद्देश्य के लिए भेजा है? ये सारे प्रश्न उस समय अधूरे रह गये जब उसने खड़े होकर एड़ी के टोहके से नृत्य का पहला कम्पन प्रारम्भ किया।

आज भी वह उसी प्रकार उसी लय के साथ मूक मुद्रा युक्त नृत्य कर रही थी, परंतु सूर्य ढलने पर मैंने देखा कि विज्ञानानंद आज भी अवचिल अकम्पित ध्यानस्थ थे। एक क्षण के लिए मुझे विचार आया कि कहीं विज्ञानानंद का शरीर शांत तो नहीं हो गया, परंतु उनके होठों से निकलते हुए स्फुट-अस्फुट शब्द उनकी जीवन्तता का परिचय दे रहे थे।

दूसरी रात मैं कुछ क्षणों के लिए लेटा तो अवश्य परंतु रात भर मुझे नींद नहीं आई। मैं लेटा हुआ था, और उर्वशी विज्ञानानंद के सामने अत्यन्त विलासमय रूप में बैठी हुई थी। प्रातःकाल उठकर मैंने स्नान किया, परंतु जितना ही ज्यादा अपने शरीर पर पानी डालता था, उतनी ही दाहकता बढ़ती जाती। थका हुआ, शिथिल गति से चल कर मैं कानन शिला पर आया, तब तक उर्वशी पुनः आ चुकी थी, रात्रि

को कुछ समय के लिए वह कहीं चली गई थी, अवश्य ही अपना श्रृंगार करने और अपने आपको ज्यादा से ज्यादा मोहक बनाने के लिए किसी स्थान पर जाती होगी, परंतु आज तो प्रातः सात बजे से ही शिला पर उपस्थित थी, उसके चेहरे की मुख मुद्रा संकल्पित व कठोर थी, सम्भवतः उसने निश्चय कर लिया था, कि आज हर हालत में विजय प्राप्त करनी है। आज का नृत्य उसने जल्दी ही प्रारम्भ कर दिया, शायद वह नृत्य के द्वारा ही अपनी विजय को पूर्ण सार्थक समझ रही थी, ज्यों-ज्यों सूर्य का रथ आकाश की ओर अग्रसर हो रहा था, त्यों-त्यों उसके नृत्य की लय बढ़ती जा रही थी, साधना का आज अन्तिम दिन था, और उस शिला पर उर्वशी का अत्यधिक मोहक, विलासमय सौन्दर्य से परिपूर्ण नृत्य गति की चरम सीमा पर था, धीरे-धीरे दोपहर हुई, सांझ ढली और शुभ्र आकाश में साक्षीभूत पूर्ण चांदनी के साथ चन्द्रमा भी उपस्थित हुआ, पर उर्वशी के पैर बराबर गतिशील बने रहे, पसीने से उसका शरीर भीग गया था, शरीर के वस्त्र चिपक गए थे, चेहरे पर स्वेद कण थिरक रहे थे, परंतु वह अपने सुंदर सुकोमल पैरों से नृत्यशील थी, थकावट से उसका सारा शरीर निढाल हो रहा था, निरंतर नृत्य से थोड़ा-थोड़ा खून बहने लग गया था, जिससे शुभ्र स्फटिक शिला कहीं कहीं रक्तिम हो रही थी, मैंने देखा कि थकावट से चूर उर्वशी निढाल होकर संज्ञा शून्य सी स्वामी विज्ञानानंद के सामने गिर गई, उसके पैरों में कम्पन था, तलवों से खून की बूंदें छलछला रही थीं, और सारा शरीर संज्ञाशून्य सा महायोगी के सामने पसरा हुआ था।

मैंने देखा महायोगी उसी प्रकार शांत, समाधिस्थ थे, उनकी आंखों में किसी प्रकार का कोई कम्पन नहीं था, एक घण्टे तक संज्ञाशून्यता के बाद अनिन्द्य सुंदरी उर्वशी ने सिर ऊपर उठाया, मैंने देखा कि उसकी आंखों से अश्रुकण निकल रहे थे, कंठ अवरुद्ध हो गया था, गला भर आया था और दोनों हाथ जोड़े हुए उसका सारा शरीर थरथरा रहा था। एक क्षण के लिए मुझे स्वामी विज्ञानानंद पर क्रोध आया, परंतु मैं विवश था, मैं कर भी क्या सकता था, मैंने महसूस किया कि आज योग के सामने सौन्दर्य और विलास पराजित थे, एक योगी के सामने अनिन्द्य सुंदरी विवश, शक्तिहीन, भीतहिरणी की तरह थी, इतनी हिम्मत नहीं थी, कि वह विज्ञानानंद को स्पर्श करे परंतु उसके चेहरे और आंखों से बहते हुए अश्रुकण अपनी पराजय अनुभव कर रहे थे, उसके मुंह से अस्फुट शब्द निकले—

''मैं इन्द्र सभा की नृत्यांगना उर्वशी आपके सामने पराजित हूं, आज पहली बार मैं स्वयं को विवश अनुभव कर रही हूं, मेरा यौवन, मेरा सौन्दर्य सब कुछ व्यर्थ है, बेमानी है, योग के सामने यह सौन्दर्य पराजित और प्रताड़ित है।''

ऐसा कहते-कहते वह उठ खड़ी हुई, आंसुओं से सिक्त आंखों से उसने मुझे जी भर के देखा और धीरे-धीरे शिला से नीचे उतर कर उत्तर दिशा की ओर बढ़ गई।

दूसरा दिन हुआ, आकाश में सूर्य देव मुस्कराने लगे। मैं पिछले दिन की घटनाओं से स्तम्भित था, चाहे योगी ही हो पर नारी का इस प्रकार से अपमान मेरे लिए असह्य था, मैं गुरु आज्ञा से बंधा हुआ था। पहली बार मैंने योग के महत्व को अनुभव किया, पहली बार साधना के मूल्य और उसकी उच्चता को स्वीकार किया, पहली बार विज्ञानानंद के चरणों में अपने आपको धन्य-धन्य अनुभव किया।

आज साधना का अन्तिम दिन था, लगभग चार बजे महायोगी ने अपनी आंखें खोलीं, समाधि भंग हुई और सुंदर कमलवत् नेत्रों से पूर्ण शांति के साथ उन्होंने मेरी ओर देखा, जैसे उन्हें पिछले तीन दिनों की घटनाओं का कोई भान न हो। साधना की सफलता उनके चेहरे पर प्रतिबिम्बित हो रही थी, उनका मुख मंडल एक अपूर्व आभा और साधना की रश्मियों से दमक रहा था, वे अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल हुए थे, और ब्रह्मांड साधना के द्वारा उन्होंने उन रहस्यों को पा लिया था, जो अभी तक सर्वथा अज्ञात थे।

तभी मैंने देखा कि योग मार्ग से पूज्य गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानंद जी सवेग आ रहे हैं, मेरे चेहरे का और हृदय का मालिन्य एक बारगी समाप्त हो गया, संशय-असंशय के भाव मिट गए और ज्योंही वे शिला के पास पहुंचे, प्रसन्नता के साथ मैंने उन्हें प्रणाम किया। वे शिला पर विज्ञानानंद के पास जा खड़े हुए और उन्हें उठाकर अपने सीने से लगा लिया, बोले — 'विज्ञान! तुमने दुहरी सफलता पाई है, ब्रह्मांड साधना में पूर्णता तो प्राप्त की ही है, योग के द्वारा उर्वशी के गर्व को भी खण्डित किया है।'

आज भी पौराणिक घटनाएं दुहराई जाती हैं, हिमालय में आज भी देवता और अप्सराएं मौजूद हैं, आज भी तपस्या की उच्चता से इन्द्र भयभीत होते हैं, और अप्सराओं के माध्यम से तपस्या में विघ्न डालने के लिए उनका प्रयोग करते हैं, और आज भी ऐसे महायोगी हैं जो इन सबसे परे पूर्णतः नियंत्रित और समर्थ हैं।

उर्वशी तंत्र

प्राचीन काल से ही भारतीय साधना पद्धति में सौन्दर्य की साधना करना भी एक आवश्यक गुण माना गया है। सौन्दर्य शब्द को लेकर के समाज में आज जो भी धारणा हो, उसके विषय में तो कुछ भी नहीं कहा जा सकता, किंतु प्राचीन काल में ऋषियों के मन में सौन्दर्य को लेकर के न तो कोई द्वन्द्व था, न उनके मन में कोई ऐसी धारणा थी कि सौन्दर्य की उपासना अपने आपमें कोई अश्लील धारणा है। यही कारण है, कि प्राचीन ग्रंथों में सौन्दर्य का मूर्त रूप अप्सरा को मान कर प्रकारान्तर से सौन्दर्य की ही उपासना करने का प्रयास किया है, क्योंकि सौन्दर्य नारी के माध्यम से अपने सर्वोतकृष्ट रूप में स्पष्ट हो सकता है . . . और संसार की तीन अद्वितीय सुंदरियां मानी गई हैं, जिनके नाम उर्वशी, रम्भा, और मेनका हैं, इनमें भी उर्वशी का नाम सर्वोपरि है। ये सुंदर स्त्रियां देवताओं के राजा इन्द्र की सभा में अद्वितीय नृत्य और सूर्य के समान प्रखर सौन्दर्य रश्मियों से सबको अभिभूत करती रहती हैं।

उर्वशी के बारे में ग्रंथों में कहा गया है, कि वह चिरयौवना है, हजारों वर्ष बीतने पर भी वह 18 वर्ष की उम्र की युवती के समान अल्हड़ मदमस्त और यौवन रस से परिपूर्ण रहती है। सारा शरीर एक अद्वितीय सुन्दरता से परिपूर्ण रहता है, जिसको देखकर व्यक्ति तो क्या, देवता भी ठगे रह जाते हैं। विश्वामित्र संहिता के अनुसार गोरा अण्डाकार चेहरा, लम्बे और एड़ियों को छूते हुए घने श्यामल केश, जैसे कोई बादलों की घटा उमड़ आई हो, गोरा रंग ऐसा, कि जैसे स्वच्छ दूध में केसर मिला दी हो, बड़ी-बड़ी खंजन पक्षी की तरह आंखें जो हर क्षण

गहन जिज्ञासा लिए हुए इधर-उधर देखती हों, छोटी चिबुक, सुंदर और गुलाबी होंठ, आकर्षक चेहरा और अद्वितीय आभा से युक्त शरीर . . . सब मिलाकर एक ऐसा सौन्दर्य जो उंगली लगने पर मैला हो जाए। ऐसी ही सौन्दर्य की सम्राज्ञी उर्वशी संसार की अद्वितीय सौन्दर्य सम्राज्ञी है, जो अपने यौवन व सौन्दर्य के माध्यम से पूरे संसार को मोहित किए हुए है।

विश्वामित्र ने जब यह सुना कि उर्वशी इन्द्र के दरबार की उज्जवल सौन्दर्यमयी नृत्यांगना है जिसके नृत्य से मनुष्य तो क्या बहता हुआ पानी भी ठिठक कर रुक जाता है, तो उन्होंने आज्ञा दी कि उर्वशी मेरे आश्रम में भी नृत्य करे।

विश्वामित्र ने अपना संदेश इन्द्र तक पहुंचा दिया और इन्द्र ने हाथों- हाथ मना कर कहला दिया कि यह किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं है।

विश्वामित्र तो हठी योगी रहे हैं, उन्होंने मंत्र बल से उर्वशी को अपने आश्रम में बुलाया और कहा — तुम्हें ठीक वैसा ही नृत्य मेरे शिष्यों के सामने इस आश्रम में करना है, जैसा इन्द्र की सभा में तुम करती हो।

उर्वशी ने यौवन के नशे में चूर दम्भ से मना कर दिया और इठलाती हुई पुनः इन्द्रलोक चली गई।

विश्वामित्र तिलमिला कर रह गए। उन्होंने उसी क्षण प्रतिज्ञा की कि मैं सर्वथा नये तंत्र की रचना करूंगा और तंत्र बल से इसे अपने आश्रम में बुलाऊंगा, एक बार नहीं जब भी चाहे नृत्य करवाऊंगा और इसी जिद्द और क्रोध का परिणाम हुआ '**उर्वशी तंत्र**'।

किसी भी अप्सरा की साधना चार रूपों में की जा सकती है। मां, बहन, पत्नी और प्रेमिका के रूप में साधना सम्पन्न करना श्रेष्ठ माना गया है। विश्वामित्र ने प्रेमिका रूप से तंत्र रचना की और इसी तंत्र के माध्यम से उर्वशी को अपने आश्रम में आने के लिए बाध्य किया और उसे अद्वितीय नृत्य करना पड़ा। उर्वशी को सिद्ध कर निम्न लाभ प्राप्त किए जाते हैं—

1. जब भी चाहे उर्वशी को प्रत्यक्ष बुलाए और उसका नृत्य देखे।
2. उर्वशी का प्रेमिका रूप में उपयोग करे, उसके साथ रमण करे।
3. उर्वशी के माध्यम से मनोरंजन करें।
4. उर्वशी के द्वारा अतुलनीय धन, वैभव प्राप्त करे।
5. उर्वशी के द्वारा चिरयौवन प्राप्त कर जीवन का पूर्ण आनन्द उपभोग करे।
6. उर्वशी को सिद्ध कर उन पदार्थों और भोगों को प्राप्त करे जो उसके मन की

आकांक्षा होती है।

विश्वामित्र के बाद उनके शिष्य भूरिश्रवा, चिन्मय, देवसुत, गन्धर, और यहां तक कि देवी विश्रवा और रत्नप्रभा ने भी उर्वशी सिद्ध कर जीवन के सम्पूर्ण भोगों का भोग किया। गोरखनाथ ने भी इस साधना के माध्यम से चिरयौवन प्राप्त किया और गोरक्षपुर में उन्होंने हजारों शिष्यों के सामने सदेह उर्वशी को बुलाकर अद्वितीय नृत्य सम्पन्न करवाया। इतिहास साक्षी है कि स्वामी शंकराचार्य ने इसी साधना को सम्पन्न कर अपने शिष्य पद्मपाद को अतुलनीय वैभव का स्वामी बना दिया, यहीं नहीं अपितु मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ के दिनों में शंकराचार्य ने उर्वशी को तंत्र के माध्यम से उसे अपने सामने बुलाकर उससे काम कला की वे बारीकियां समझीं जो सन्यासी होने की वजह से उनके लिए असंभव थी, इसी साधना के बल पर आज से सौ साल पहले स्वामी विशुद्धानंद जी ने बनारस में नवमुण्डी आश्रम में अभिनव नृत्य कराकर अंग्रेजों को आश्चर्यचकित कर दिया था, और उस समय के तत्कालीन कलेक्टर ब्लासिम ने तो कहा था, कि मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसी सुंदरी नहीं देखी, वह अचानक आई और जो नृत्य उसने किया वह आश्चर्यचकित करने वाला था।

उर्वशी साधना कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है। शास्त्रों के अनुसार भी उर्वशी की साधना पत्नी या प्रेमिका के रूप में ही सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना विधि

यह साधना 49 दिनों की है, किसी भी पूर्णमासी की रात्रि से यह साधना प्रारम्भ की जाती है, घर के किसी कोने में सफेद आसन बिछाकर उत्तर की तरफ मुंह कर बैठ जाएं, सामने घी का अखण्ड दीपक प्रज्ज्वलित करे और स्वयं पानी में गुलाब का थोड़ा सा इत्र मिलाकर स्नान कर स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाएं, और सामने उर्वशी यंत्र और चित्र रखकर मोती की माला से मंत्र जप करे।

मंत्र

।। ॐ श्रीं क्लीं आगच्छागच्छ स्वाहा ।।

मंत्र जप समाप्ति के बाद उसी स्थान पर सो जाएं।

इन 49 दिनों में वह न तो किसी से बात करे, और न कमरे से बाहर जाए, केवल शौचादि क्रिया करने के लिए बाहर जा सकता है। सातवें दिन निश्चय ही

घुंघरुओं की मधुर आवाज सुनाई देती है, मगर साधक को चाहिए कि वह अविचलित भाव से मंत्र जप करता रहे। इक्कीसवें दिन बिल्कुल ऐसा लगेगा कि जैसे अपूर्व सी सुगन्ध फैल गई है, इसके बाद नित्य ऐसी सुगन्ध और ऐसा आभास होगा।

36 वें दिन बिल्कुल ऐसा लगेगा कि जैसे कोई अद्वितीय सुन्दरी आसन के पास आकर बैठ गई है, मगर साधक अविचलित न हो और मंत्र जप करता रहे, 47 वें दिन साधक की परीक्षा आरम्भ होती है, और वह सशरीर उपस्थित होकर साधक की गोदी में बैठ जाती है, फिर भी साधक को चाहिए कि वह न तो विचलित हो और न कामोत्तेजक हो। 49 वें दिन वह अपूर्व श्रृंगार कर साधक से सट कर बैठ जाएगी और पूछेगी कि मेरे लिए क्या आज्ञा है, तब साधक कहे कि मेरी पत्नी बन प्रेमिका की तरह प्रसन्न करो, तब वह सिद्ध हो जाती है, और जीवन भर सुख, काम, द्रव्य प्रदान करती रहती है।

यह आजमाया हुआ तंत्र है, और अपने आप में प्रामाणिक सिद्ध प्रयोग है, एक बार सिद्ध करने पर फिर जीवन में बार-बार प्रयोग करने की जरूरत नहीं रहती, इस साधना में तीन बातें आवश्यक हैं —

1. साधनाकाल में 49 दिन तक किसी से भी कुछ भी न बोले।
2. साधना के बाद उर्वशी सिद्ध होने पर परस्त्रीगमन न करे।
3. उर्वशी तंत्र सिद्ध होने पर उसके साथ रमण करे, जो कुछ भी चाहे प्राप्त करे, पर द्रव्य का दुरुयोपयोग न करे।

यह साधना आज भी जीवित है, और वर्तमान में भी कई तांत्रिकों ने इसे सिद्ध कर रखा है। वस्तुतः यह जीवन की एक अद्भुत और पूर्ण सुखोपभोग देने वाली सौन्दर्यमयी साधना है, जिसे सिद्ध करने में शास्त्रीय दृष्टि से भी किसी प्रकार का बन्धन या दोष नहीं है। प्रत्यक्ष रूप से देखने पर यह साधना लम्बी प्रतीत होती है किंतु इसके मंत्र पर ध्यान दें तो यह अन्य साधना की अपेक्षा सरल की कही जा सकती है। साथ ही महर्षि विश्वामित्र के द्वारा प्रणीत होने के कारण इसकी प्रामाणिकता स्वयं सिद्ध है।

नाभिदर्शना अप्सरा

मैं कालीदास पर पी0 एच0 डी0 कर रहा था, शोध करते-करते मुझे प्रामाणिक रूप से यह जानकारी मिली, कि कालीदास ने नाभिदर्शना अप्सरा को सिद्ध किया था, और इसी साधना की बदौलत उन्हें वचन सिद्धि प्राप्त हुई थी। इसी अप्सरा के सान्निध्य में रहने के की वजह से वे जीवन भर मस्ती में, उमंग में, जोश में, और आनन्द में काव्य लिखते रहे, उनके सारे काव्य का लक्ष्य **'नाभि दर्शना अप्सरा'** ही थी।

अंग्रेजी में मुहावरा है — There is a woman behind every successful man. अर्थात प्रत्येक सफल व्यक्ति के पीछे एक नारी होती है। इसमें कोई संदेह भी नहीं। ऊर्जा का स्रोत तो नारी को ही माना गया है। इस बात को तो भारतीय दर्शन ने न केवल स्वीकार ही किया है अपितु उसे उपासना योग्य तक बना दिया है। किंतु जहां किसी कलाकार अथवा कवि की बात आती है, तो यही बात कुछ और भी अधिक विशिष्टता से सामने आती है। आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक जितने भी कलाकार हुए हैं उनके मानस में किसी न किसी नारी का बिम्ब रहा ही है। सृजन का मूल, उत्स व प्रेरणा कोई नारी ही रही है। उनमें व सामान्य मनुष्य में अंतर केवल इतना ही होता है कि जहाँ सामान्य मनुष्य के लिए नारी का अर्थ दैहिक भर ही होता है वहीं कवि हृदय व्यक्ति के लिए वह उपासना जैसा स्थान रखता है। एक प्रकार से कहा जाए तो कोई भी कलाकार किसी भी नारी के माध्यम से वस्तुतः अपने ही हृदय के सौन्दर्य को प्रकट करता है। बाह्य स्वरूप अथवा अंतिम बिंदु पर वह निरपेक्ष हो जाता है अर्थात वह ऐसी उपासना करते-करते उस बिंदु पर

पहुँच जाता है जहाँ फिर उसे सम्पूर्ण विश्व ही सौन्दर्यमय दिखने लग जाता है। इस विषय को सामान्य दृष्टि से नहीं वरन किसी कवि के हृदय से समझना होगा। तभी समझ में आ सकेगा कि कैसे महाकवि कालीदास ने प्रकृति के एक-एक कण में सौन्दर्य देखा और उसे इस रूप में अंकित किया कि आज तक उनकी समकक्षता कोई कर ही न सका। वे स्वयं में एक उपमा बन गए। आज तक किसी भी रचना को उनके द्वारा रचित कृतियों की कसौटी पर कस कर कहा जाता है कि वे स्वर्ण हैं अथवा सामान्य लौह खंड। इससे अधिक किसी कवि की सार्थकता क्या हो सकती है? मूलतः राजकवि होते हुए भी वे स्वयं में अपने ऐश्वर्य, विलास, उमंग, ओज, प्रभाव, वर्चस्व, कला आदि में किसी भी राजपुरुष से कम नहीं थे। महाराज भोज भी उनकी इन उपलब्धियों से अनभिज्ञ नहीं थे और परस्पर मित्र-भाव होने के कारण अन्ततोगत्वा एक दिन कालीदास ने महाराज भोज के समक्ष इस रहस्य का उद्घाटन भी कर दिया कि ऐसा सब कुछ उनके जीवन में कैसे संभव हो पा रहा है।

राजा भोज के अत्यधिक हठ करने पर एक दिन कालीदास ने राजा भोज के समक्ष नाभिदर्शना को प्रत्यक्ष प्रगट कर दिखा दिया, रूप में, सौन्दर्य में, और यौवन में वह छलकते हुए जाम की तरह थी, उसका सारा शरीर गौर वर्ण और चन्द्रमा की चांदनी में नहाया हुआ सा लग रहा था, पुष्प से भी कोमल और नाजुक नाभिदर्शना को कालीदास के कक्ष में थिरकते देख कर राजा भोज अत्यधिक संयमित होते हुए भी बेसुध से हो गए, उनकी आंखों के सामने हर क्षण नाभिदर्शना ही दिखाई देती रही।

साधना ग्रंथों में नाभिदर्शना के बारे में जो कुछ मिलता है उसके अनुसार नाभिदर्शना, षोडश वर्षीय अत्यन्त सुकुमार और सौन्दर्य की सम्राज्ञी है। उसका सारा शरीर कमल से भी ज्यादा नाजुक और गुलाब से भी ज्यादा सुंदर है, उसके सारे शरीर से धीमी धीमी खुशबू प्रवाहित होती रहती है, जो कि उसकी उपस्थिति का भान कराती रहती है, इस अप्सरा की काली और लम्बी आंखें, लहराते हुए झरने की तरह केश और चन्द्रमा की तरह लम्बी बांहें और सुन्दरता से लिपटा हुआ पूरा शरीर एक अजीब सी मादकता बिखेर देता है, और इसे इन्द्र का वरदान प्राप्त है, कि जो भी इसके सम्पर्क में आता है, वह पुरुष, पूर्ण रूप से रोगों से मुक्त होकर चिर यौवनमय बन जाता है, उसके शरीर का काया कल्प हो जाता है, और पौरुष की दृष्टि से वह अत्यन्त प्रभावशाली बन जाता है। और फिर नाभिदर्शना अप्सरा को विविध उपहार देने का शौक है। जो पुरुष इसके सम्पर्क में आता है, उसे यह हीरे, मोती, स्वर्ण मुद्राओं से एवं विविध उपहारों से सिक्त कर देती है, जीवन भर उस पुरुष के अनुकूल रहती हुई

वह उसका प्रत्येक मामले में मार्गदर्शन करती रहती है, मातृत्व की तरह विविध स्वादिष्ट भोजन कराती है, प्रेमिका की तरह सुख एवं आनन्द की वर्षा करती रहती है।

नाभिदर्शना अप्सरा साधना

यह एक दिन की साधना है, और कोई भी साधक इस साधना को सिद्ध कर सकता है। किसी भी शुक्रवार की रात्रि को यह साधना सिद्ध की जा सकती है।

इस साधना को सिद्ध करने के लिए थोड़े बहुत धैर्य की जरूरत है, क्योंकि कई बार पहली बार में सफलता नहीं भी मिल पाती, तो साधक को चाहिए, कि वह इसी साधना को दूसरी बार या तीसरी बार भी सम्पन्न करें, परंतु अगले किसी भी शुक्रवार की रात्रि को ही यह साधना करें।

साधना समय

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जा सकती है, और साधक चाहे तो अपने घर में या किसी भी अन्य स्थान पर इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक सुंदर, सुसज्जित वस्त्र पहने, इसमें यह जरूरी नहीं है कि साधक धोती ही पहिने, अपितु उसको जो वस्त्र प्रिय हो, जो वस्त्र उसके शरीर पर खिलते हों, या जिन वस्त्रों को पहिनने से वह सुन्दर लगता हो, वे वस्त्र धारण कर साधक उत्तर दिशा की ओर मुंह कर आसन पर बैठे।

बैठने से पूर्व अपने वस्त्रों पर सुगन्धित इत्र का छिड़काव करें और पहले से ही दो सुंदर गुलाब की मालाएं ला कर अलग पात्र में रख दें। यदि गुलाब की माला उपलब्ध न हो तो किसी भी प्रकार के पुष्पों की माला ला कर रख सकता है।

फिर सामने एक रेशमी वस्त्र पर अद्वितीय '**नाभिदर्शना महायंत्र**' को स्थापित करें और केसर से उसे तिलक करें। यंत्र के पीछे **नाभिदर्शना चित्र**' को फ्रेम में मढ़वा कर रख दें, और सामने सुगन्धित अगरबत्ती एवं शुद्ध घृत का दीपक लगाएं। इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक, नाभिदर्शना अप्सरा को प्रेमिका रूप में सिद्ध करना चाहता हूं, जिससे कि वह जीवन भर मेरे वश में रहे, और मुझे प्रेमिका की तरह ही सुख, आनंद एवं ऐश्वर्य प्रदान करे। इसके बाद '**नाभिदर्शना अप्सरा माला**' से निम्न मंत्र जप संपन्न करें। इसमें 51 माला मंत्र जप उसी रात्रि को सम्पन्न हो जाना चाहिए, हो सकता है, इसमें तीन या चार घंटे लग सकते हैं।

अगर बीच में घुंघुरुओं की आवाज आए या किसी का स्पर्श अनुभव हो,

तो साधक विचलित न हो और अपना ध्यान न हटाएं, अपितु 51 माला मंत्र जप एकाग्र चित्त हो कर सम्पन्न करें। इस साधना में जितनी ही ज्यादा एकाग्रता होगी, उतनी ही ज्यादा सफलता मिलेगी। 51 माला पूरी होते होते जब यह अद्वितीय अप्सरा घुटने से घुटना सटाकर बैठ जाए, तब मंत्र जप पूरा होने के बाद साधक अप्सरा माला को स्वयं धारण कर लें, और सामने रखी हुई गुलाब की माला उसके गले में पहिना दें। ऐसा करने पर नाभिदर्शना अप्सरा भी सामने रखी हुई दूसरी माला उठा कर साधक के गले में डाल देती है।

तब साधक नाभिदर्शना अप्सरा से वचन ले ले कि मैं जब भी अप्सरा माला से एक माला मंत्र जप करूं, तब तुम्हें मेरे सामने सशरीर उपस्थित होना है, और मैं जो चाहूं वह मुझे प्राप्त होना चाहिए तथा पूरे जीवन भर मेरी आज्ञा को उल्लंघन न हो। तब नाभि दर्शना अप्सरा साधक के हाथ पर अपना हाथ रखकर वचन देती है, कि मैं जीवन भर आपकी इच्छानुसार कार्य करती रहूंगी।

इस प्रकार साधना को पूर्ण समझें, और साधक अप्सरा के जाने के बाद उठ खड़ा हो। साधक को चाहिए, कि वह इस घटना को केवल अपने गुरु के अलावा और किसी के सामने स्पष्ट न करे, क्योंकि साधना ग्रंथों में ऐसा ही उल्लेख मुझे पढ़ने को मिला है।

मैंने जिस मंत्र से इस साधना को सिद्ध किया है, वह मंत्र है —

।। ॐ ऐं श्रीं नाभिदर्शना अप्सरा प्रत्यक्ष श्रीं ऐं फट् ।।

उपरोक्त मंत्र गोपनीय है, साधना सम्पन्न होने पर नाभिदर्शना अप्सरा महायंत्र को अपने गोपनीय स्थान पर रख दें, और अप्सरा चित्र को भी अपने बाक्स में रख दें। गले में जो अप्सरा माला पहनी हुई है, वह भी अपने घर में गुप्त स्थान पर रख दें, जिससे कि कोई दूसरा उसका उपयोग न कर सके।

जब साधक को भविष्य में नाभिदर्शना अप्सरा को बुलाने की इच्छा हो, तब उस महायंत्र के सामने अप्सरा माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप कर लें। अभ्यास होने के बाद तो यंत्र या माला की आवश्यकता भी नहीं होती, केवल मात्र सौ बार मंत्र उच्चारण करने पर ही अप्सरा प्रत्यक्ष प्रकट हो जाती है।

मृगाक्षी अप्सरा

अप्सरा सिद्धि प्राप्त करना किसी भी दृष्टि से अमान्य और अनैतिक नहीं है। उच्चकोटि के योगियों, सन्यासियों, ऋषियों और देवताओं तक ने अप्सराओं और किन्नरियों की साधना की है। यों तो 'मंत्र महोदधि' आदि अन्य तांत्रिक ग्रंथों में 108 विभिन्न अप्सराओं की प्रामाणिक साधनाएं दी हुई हैं, और उनमें से कई अप्सराओं की साधनाएं साधकों ने सिद्ध की हैं, और उसका लाभ उठाया है। पर हमें 'सुरति प्रिया' वर्ग की अप्सरा साधना का प्रामाणिक विवरण प्राप्त नहीं हो पा रहा था। शिमला के पास चैल नाम का एक स्थान है, जो कि प्रकृति की दृष्टि से अत्यंत रमणीय और प्रसिद्ध स्थान है, जिसे महाराज पटियाला ने बसाया था।

जब हम चैल के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, तभी हमारी वहां पर एक गृहस्थ सन्यासी से भेंट हो गई, 'गृहस्थ संन्यासी' शब्द मैं इसलिए प्रयुक्त कर रहा हूं, कि वे सही अर्थों में तो हिमाचल में रहने वाले गृहस्थ ही हैं, जिनके एक पत्नी और तीन संताने हैं, परंतु यदि मूल रूप से देखा जाए तो वे संन्यासी हैं। उनका सारा जीवन तांत्रिक साधनाओं में ही व्यतीत हुआ, और तंत्र के क्षेत्र में वे अद्वितीय सिद्ध योगी हैं, उनका नाम सौन्दर्यानंद जी है। हमारी जिज्ञासा बढ़ी, हमने नाम तो पहले भी सुन रखा था, और हमें यह ज्ञात था, कि अप्सरा साधनाओं में ये सिद्धहस्त आचार्य हैं, तथा इन्होंने लगभग सभी की सभी अप्सराओं की साधनाएं सम्पन्न की हैं। हमारी जिज्ञासा यह थी कि यदि हमें इनके द्वारा सुरति प्रिया अप्सरा साधना की जानकारी और साधना रहस्य ज्ञात हो जाए तो यह काफी महत्वपूर्ण कार्य होगा।

वास्तव में देखा जाए तो साधनात्मक ग्रंथों में न केवल अप्सरा साधना के विषय में वरन किसी भी साधना के विषय में जो वर्णन है वह स्थूल है, उनके सूक्ष्म भेदों का वर्णन उनमें प्रायः समाविष्ट नहीं हो पाया है। इसका कारण मात्र इतना ही

है कि प्राचीनकाल में अनेक विद्याएं केवल गुरु मुख से शिष्य में परावर्तित होती रहीं, उनको लिपिबद्ध करने के विषय में चिंतन ही नहीं किया गया। साथ ही यह भी कारण हो सकता है कि कुछ स्वार्थी प्रवृत्ति के व्यक्तियों ने साधना की पद्धतियों को केवल अपनी पारिवारिक सम्पत्ति ही समझा। कारण कुछ भी रहा हो लेकिन उससे हानि तो सर्व सामान्य की ही हुई। अप्सरा साधनाओं के साथ भी यही हुआ कि उन्हें अश्लीलता, ओछेपन, काम वासना का प्रवर्धन करने वाली साधनाएं समझ लिया गया जबकि वस्तु स्थिति तो इसके सर्वथा विपरीत है।

सुरति प्रिया एक अप्सरा का भी नाम है और अप्सराओं के एक वर्ग का भी नाम है। मृगाक्षी, इसी सुरति प्रिया वर्ग की शीर्षस्थ नायिका है। सुरति प्रिया का सीधा सा तात्पर्य है जो रति प्रिय हो। रति-प्रिय शब्द का यदि सामान्य अर्थ लगाएं तो वह वासनात्मक ही होगा किंतु इसी रतिप्रिय शब्द में 'सु' लगा कर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि ऐसी क्रीड़ा जो शालीन हो, सुसभ्य हो, आनंदप्रद हो . . . और ऐसा तो तभी संभव हो सकता है जब साधक स्वयं शिष्ट, शालीन, सुसभ्य हो। उसे वह कला आती हो कि कैसे किसी स्त्री से वासनात्मक बिम्बों को प्रकट किए बिना भी मधुर वार्तालाप किया जा सकता है, कैसे वह मधुर नोक-झोंक की जा सकती है जो किसी प्रेमी व प्रेमिका के मध्य सदैव चलती रहने वाली क्रीड़ा होती है। मृगाक्षी तो सम्पूर्ण रूप से प्रेमिका ही होती है, मधुर ही होती है, अपने साधक को रिझाने की कला जानती है, उसे तनावमुक्त करने के उपाय सृजित करती रहती है, उसे चिंतामुक्त बनाए रखने के प्रयास करती रहती है। तभी तो संन्यासियों के मध्य मृगाक्षी से अधिक लोकप्रिय कोई भी अप्सरा है ही नहीं। साधकों को यह जिज्ञासा हो सकती है कि कैसे एक ही अप्सरा अनेक-अनेक संन्यासियों के मध्य उपस्थित रह सकती है? इसके प्रत्युत्तर के लिए ध्यान रखना चाहिए कि अप्सरा मूलत: देव वर्ग में आती है जो वर्ग अपने स्वरूप को कई-कई रूपों में विभक्त कर सकती है।

जब चर्चा गुरुदेव के बारे में चली तो उन्हें उनके साथ व्यतीत किए हुए दिन याद हो आए। उन्होंने बताया कि मैं लगभग एक वर्ष से भी ज्यादा उनके साथ रोहतांग के पास रहा था, और उनसे काफी कुछ साधनाएं मुझे प्राप्त हुई थीं।

पर इसके बाद मेरा रुझान अप्सरा साधना की ओर बढ़ गया, और मैंने अपने जीवन में यह निश्चय किया कि सभी साधनाओं को परख लूं और सभी साधनाएं संपन्न कर लूं, और मुझे इसमें पूरी कामयाबी मिली। लगभग सभी अप्सराओं को मैंने सिद्ध किया है, यद्यपि उन सब की क्रिया, उन सब को सिद्ध करने का तरीका अपने आप

में अलग, और गोपनीय है, यदि '**मंत्र महार्णव**' आदि ग्रंथों में प्रकाशित साधनाओं के आधार पर इन्हें सिद्ध किया जाए तो सफलता नहीं मिल पाती है।

मैंने परिश्रम कर कई संन्यासियों से और इस क्षेत्र के श्रेष्ठ योगियों से मिल कर इन साधनाओं को सीखा है, सिद्ध किया है, उन्हें प्रत्यक्ष किया है, और अब मैं इससे संबंधित ग्रंथ लिख रहा हूं, यदि साधकों का सौभाग्य होगा तो यह ग्रंथ प्रकाशित भी होगा। अप्सरा साधना सिद्ध करने से व्यक्ति निश्चिन्त और प्रसन्न चित्त बना रहता है, उसे अपने जीवन में मानसिक तनाव व्याप्त नहीं होता। अप्सरा के माध्यम से उसे मनचाहा स्वर्ण, द्रव्य, वस्त्र, आभूषण और अन्य भौतिक पदार्थ उपलब्ध होते रहते हैं। यही नहीं अपितु सिद्ध करने पर अप्सरा साधक के पूर्णत: वशवर्ती हो जाती है, और साधक जो भी आज्ञा देता है, उस आज्ञा का वह तत्परता के साथ पालन करती है।

साधक के चाहने पर वह सशरीर उपस्थित होती है, यों सूक्ष्म रूप से साधक की आंखों के सामने वह हमेशा बनी रहती है। इस प्रकार सिद्ध की हुई अप्सरा ''प्रिया'' रूप में ही साधक के साथ रहती है। जब हमने सुरति प्रिया अप्सरा साधना रहस्य के बारे में जिज्ञासा प्रगट की, तो वे एक क्षण के लिए चौंके, किंतु उन्हें यह ज्ञात था कि हम गुरुदेव के विधिवत दीक्षित शिष्य हैं, अत: उन्होंने 'मृगाक्षी अप्सरा साधना रहस्य' स्पष्ट कर दिया, जो कि अभी तक सर्वथा गोपनीय रहा है। मृगाक्षी का तात्पर्य मृग के समान भोली और सुन्दर आंखों वाली अप्सरा से है। जो सुंदर, आकर्षक, मनोहर, चिरयौवनवती और प्रसन्न चित्त अप्सरा है, और निरंतर साधक का हित चिंतन करती रहतीं है, जिसके शरीर से निरंतर पद्म गंध प्रवहित होती रहती है, और जो एक बार सिद्ध होने पर जीवन भर साधक के वश में बनी रहती है। स्वामी जी ने हमें इससे संबंधित तांत्रिक प्रयोग स्पष्ट किया था, जो कि वास्तव में ही अचूक और महत्वपूर्ण है।

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक अत्यन्त सुंदर सुसज्जित वस्त्र पहिन कर साधना स्थल पर बैठे। इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्र पहने जा सकते हैं, जो सुंदर हों, आकर्षक हों, साथ ही साथ अपने कपड़ों पर गुलाब का इत्र लगावे और कान में भी गुलाब के इत्र का फोहा लगा लें।

फिर सामने गुलाब की दो मालाएं रखें और उसमें से एक माला साधना के समय स्वयं धारण कर लें।

इसके बाद एक थाली लें, जो कि लोहे की या स्टील की न हो, फिर उस थाली में निम्न मृगाक्षी अप्सरा यंत्र का निर्माण चांदी के तार से या चांदी की सलाका से या केसर से अंकित करें।

मृगाक्षी अप्सरा यंत्र

मृ	2	3	न
गा	7		
क्षी	5	9	मः

फिर इस पात्र में पहले से ही सिद्ध किया हुआ, 'दिव्य तेजस्वी मृगाक्षी अप्सरा महायंत्र' स्थापित करें, जो कि पूर्ण मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित, चैतन्य और सिद्ध हो। इस यंत्र के चार कोनों पर चार बिन्दियां लगाएं और पात्र के चारों ओर चार घी के दीपक लगाएं, दीपक में जो घी डाला जाए, उसमें थोड़ा गुलाब का इत्र भी मिला दें, फिर पात्र के सामने पांचवां बड़ा सा दीपक घी का लगावें और अगरबत्ती प्रज्जवलित करें तथा इस मंत्र सिद्ध तेजस्वी ''मृगाक्षी महायंत्र'' पर 21 गुलाब के पुष्प निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाएं।

मंत्र

।। ॐ मृगाक्षी अप्सरायै वश्यं कुरु कुरु फट्।।

जब 21 गुलाब के पुष्प चढ़ा चुकें तब प्रामाणिक और सही स्फटिक माला से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें, इस मंत्र जप में मुश्किल से दो घंटे लगते हैं।

गोपनीय मृगाक्षी महामंत्र

।। ॐ श्रृं श्रैं मृगाक्षी अप्सरायै सिद्धं वश्यं श्रैं श्रृं फट्।।

जब 21 माला मंत्र जप हो जाए, तब वह स्फटिक माला भी अपने गले में धारण कर लें, ठीक इसी अवधि में जब मृगाक्षी अप्सरा कमरे में उपस्थित हो, (साधना करते समय कमरे में साधक के अलावा और कोई प्राणी न हो) तब सामने रखी हुई दूसरी गुलाब के पुष्प की माला उसके गले में पहना दें, और वचन लें कि वह जीवन भर अमुक गोत्र के, अमुक पिता के, अमुक पुत्र (साधक) के वश में रहेगी, और जब भी वह इस मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करेगा तब वह उपस्थित होगी, तथा जो भी आज्ञा देगा उसका तत्क्षण पालन करेगी।
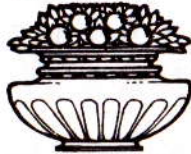
भैरवी चक्र

शास्त्रों में और तांत्रिक ग्रन्थों में उर्वशी अप्सरा को वश में करने, उसे प्रिया रूप में प्राप्त करने और उसके माध्यम से धन, सम्पत्ति, सुख-सौभाग्य प्राप्त करने के लिए साबर मंत्रों में भी कुछ विधियां दी गयी हैं, जिनके माध्यम से इस प्रकार के कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मंत्रों के माध्यम से अथवा साधनाओं के माध्यम से धन प्राप्त करना अथवा जीवन की समस्याओं को मिटाना और जीवन में निरन्तर उन्नति करना गलत नहीं है। साधु संन्यासी भी इसका उपयोग करते रहे हैं, और फिर साबर मंत्र तो स्वयं भगवान शिव के अक्षर रूप हैं, और उनके द्वारा स्पष्ट किए हुए इन मंत्रों के माध्यम से ही मनोवांछित कार्य सम्पन्न होते हैं।

उर्वशी अपने आप में अत्यन्त सौन्दर्य युक्त अप्सरा है, जो कि एक तरफ रूप और यौवन से परिपूर्ण है, तो दूसरी ओर धन और सुख-सौभाग्य देने में भी सफल है, इसीलिए उर्वशी साधना को जीवन का सौभाग्य माना गया है।

इस प्रकार की साधना को तांत्रिक ग्रन्थों में '**भैरवी चक्र साधना**' कहा गया है, भैरवी का तात्पर्य – एक ऐसी देवी जो मन्त्रों के द्वारा साधक के लिए सिद्ध हो कर उसका मनोवांछित कार्य सम्पन्न करती है, और इसीलिए उर्वशी जैसी अद्वितीय अप्सरा को सिद्ध करने और प्रिया रूप में उसे अपने अनुकूल बनाने में सिद्ध ऐसे प्रयोग को भी '**भैरवी चक्र प्रयोग**' कहा गया है।

यह साधना वास्तव में ही शीघ्र सिद्धिदायक, पूर्ण प्रभावयुक्त और अचूक फल देने वाली है। यह मात्र दो दिनों की साधना है। किसी भी शुक्रवार की रात्रि से यह प्रयोग प्रारम्भ होता है और शनिवार की रात्रि को समाप्त हो जाता है। इस साधना

को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

साधना काल में पुरुष अच्छे और सुन्दर वस्त्र धारण कर के बैठे, साधक चाहे तो धोती, कुर्ता या पैंट-शर्ट आदि किसी भी प्रकार के उत्तम सुसज्जित वस्त्र धारण कर के उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सामने बैठ जाए।

फिर सामने एक थाली में '**उर्वश्यै नमः**' अक्षर लिखें, और उसके आगे गुलाब या अन्य पुष्पों को बिछा कर उस पर भैरवी चक्र को स्थापित कर दें। इसे तांत्रिक ग्रन्थों में उर्वशी यन्त्र, अप्सरा यन्त्र या भैरवी यन्त्र भी कहा है। यह यन्त्र महत्वपूर्ण और जीवन भर उपयोगी रहता है।

फिर इस यन्त्र की संक्षिप्त पूजा करें, और प्रार्थना करें कि – 'मैं अमुक जाति, अमुक नाम का पुरुष पूर्ण प्रेम एवं आत्मीयता के साथ साबर मंत्र के द्वारा उर्वशी सिद्ध करने जा रहा हूं, जिससे कि उर्वशी प्रिया रूप में मेरे अधीन रहे, और जीवन भर, जैसी और जो भी आज्ञा दूं उसे पूरा करे''।

इसके बाद इस यन्त्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक लगाएं और पहले से ही मंगाया हुआ पान या जिसे संस्कृत में ताम्बूल कहते हैं, वह मुंह में रख कर चबा लें। पान में कत्था, चूना, सुपारी, इलायची आदि डाल कर ग्रहण करें। यह पान बाजार में कहीं पर भी पान वाले की दुकान पर मिल जाता है।

इसके बाद स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का 21 बार उच्चारण करें, इसमें पूरी माला मंत्र जप का विधान नहीं है।

साबर ऊर्वशी मंत्र

ॐ नमो आदेश। गुरु को आदेश। गुरुजी के मुंह में ब्रह्मा उनके मध्य में विष्णु और नीचे भगवान महेश्वर स्थापित है, उनके सारे शरीर में सर्व देव निवास करते हैं, उनको नमस्कार। इन्द्र की अप्सरा, गन्धर्व कन्या उर्वशी को नमस्कार। गगन मण्डल में घुंघुरुओं की झंकार और पाताल में संगीत की लहर।

लहर में उर्वशी के चरण। चरण में थिरकन। थिरकन में सर्प। सर्प में काम वासना। काम वासना में कामदेव। कामदेव में भगवान शिव। भगवान शिव ने जमीन पर उर्वशी को उतारा। श्मशान में धूनी जमाई। उर्वशी ने नृत्य किया। सात दीप नवखण्ड में फूल खिले, डाली झूमी। पूर्व-पश्चिम, उत्तर- दक्षिण, आकाश

-पाताल में सब मस्त भये।

मस्ती में एक ताल दो ताल तीन ताल। मन में हिलोर उठी, हिलोर में उमंग, उमंग में ओज, ओज में सुन्दरता, सुन्दरता में चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखी में शीतलता, शीतलता में सुगन्ध और सुगन्ध में मस्ती। यह मस्ती उर्वशी की मेरे मन भाई।

यह मस्ती मेरे सारे शरीर में अंग-अंग में लहराई, उर्वशी इन्द्र की सभा छोड़ मेरे पास आवे। मेरी प्रिया बने, हरदम मेरे साथ रहे, मेरो कहियो करे, जो कहूं सो पूरो करे, सोचूं तो हाजर रहे, यदि ऐसो न करे तो दस अवतार की दुहाई, ग्यारह रूद्र की सौगन्ध, बारह सूर्य को वज्र, तेंतीस कोटी देवी-देवताओं की आण।

मेरो मन चढ़े, अप्सरा को मेरो जीवन उसके श्रृंगार को। मेरी आत्मा, उसके रूप को और मैं उसको, वह मेरे साथ रहे। धन, यौवन सम्पत्ति, सुख दे। कहियो करे, हुकुम माने। रूप यौवन भार से लदी मेरे सामने रहे। जो ऐसो न करे, तो भगवान शिव को त्रिशूल और इन्द्र को वज्र उस पर पड़े।

यह मंत्र अपने आप में ही पूर्ण सिद्धिदायक मंत्र है। साबर मंत्र सीधे सरल और स्पष्ट होते हैं, इसीलिए उनके उच्चारण में किसी प्रकार का दोष व्याप्त नहीं होता। जिस सन्यासी ने मुझे यह मंत्र और प्रयोग विधि समझाई थी उन्होंने बताया था कि रात्रि को इस मंत्र का 21 बार उच्चारण करना पर्याप्त है पर यदि साधक चाहे तो 108 बार उच्चारण कर सकता है, पर इससे ज्यादा इस मंत्र का उच्चारण करने की जरूरत नहीं है।

दूसरे दिन शनिवार को भी इसी प्रकार से मंत्र जप करे, और मंत्र जप के बाद वह उस भैरवी यंत्र को धागे में या चैन में पिरोकर अपने गले में धारण कर ले। उस समय, जब उर्वशी साधक के पास प्रत्यक्ष प्रकट हो तब साधक को चाहिए कि पहले से ही मंगाए हुए फूलों के हार को उसके गले में पहना दे, खाने के लिए पान दे, और हाथ में हाथ लेकर वचन ले ले, कि जैसा साधक कहेगा, उर्वशी जीवन भर उसी प्रकार से कार्य करती रहेगी। इसके बाद जब भी साधक इस मंत्र का एक बार उच्चारण करेगा तो उर्वशी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सामने स्पष्ट होगी और साधक का कहा हुआ कार्य सम्पन्न करेगी।

अप्सरा साधना में सिद्धि के अचूक उपाय

जिस प्रकार से अप्सरा साधना के विषय में साधकों के मन में विभिन्न भ्रांत धारणाएं बनी हुई हैं, उसी प्रकार से अप्सरा साधना में सिद्धि को लेकर भी भ्रांत धारणाएं बनी हुई हैं। इसका सीधा सा कारण है कि जब से समाज ने सौन्दर्य की उपासना करना भुला दिया, उसकी दृष्टि में सौन्दर्य आराधना के योग्य न रह गया, तब से मन के भीतर की वे सभी श्रेष्ठ धारणाएं दब, घुटकर समाप्त हो गईं जो सौन्दर्य को केवल सौन्दर्य के रूप में देखती हैं। अप्सरा दैहिक सौन्दर्य का नाम है भी और नहीं भी है। यह तो निर्भर करता है कि साधक क्या विचार लेकर साधना मे प्रवृत्त हो रहा है। यदि विचार सौन्दर्य को केवल सौन्दर्य के रूप में परखने का, सराहने का, आनन्दित होने का है तो अप्सरा साधना प्रथम क्षण से ही '**सिद्ध**' हो जाती है। किंतु यदि उसे '**उन्हीं अर्थों**' में प्राप्त करने की चेष्टा है तो खेद के साथ कहना पड़ता है कि वह स्थिति तो प्रारम्भ में नहीं आ सकती। इस प्रकार से तो कोई सांसारिक स्त्री ही नहीं रीझ उठती फिर अप्सरा तो देववर्ग से सम्बन्धित होती है। जितने श्रेष्ठ वर्ग की स्त्री होगी उसे रिझाने के लिए साधक को भी स्वयं में उतना ही श्रेष्ठ बनना पड़ेगा। क्या इस बात को दैनिक जीवन में अनुभव नहीं किया जा सकता ? विवाह के पश्चात अपनी पत्नी से परिचय करने में जब व्यक्ति को छह माह लग जाते हैं, तो अप्सरा साधना के विषय में ऐसी धारणा रखना कि वह पहले ही दिन से अपना तन-मन-धन सब सौंप देगी, कितना तर्क संगत है ? इसको स्वयं सोचा जा सकता है।

किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि साधक हतोत्साहित हो जाए, वह कोई प्रयास ही न करे, जीवन में अप्सरा को समाहित करने की कोई चेष्टा ही न करे। सत्य तो यह है कि जब से साधक अप्सरा साधना में प्रवृत्त होता है तभी से वह अप्सरा भी (जिसकी साधना साधक सम्पन्न कर रहा होता है) उसे ऐसे उपाय बताने लग जाती है जिससे उसको सिद्ध किया जा सके। आप स्वयं ही सोचिए ऐसा किसी प्रेमिका के अतिरिक्त कोई अन्य जीवन में कर सकता है ? प्रेमिका का अर्थ ही होता है जो स्वयं आगे बढ़कर मनुहार सी करे। यह बात और है कि स्त्री की मनुहार को समझने के लिए हृदय की दृष्टि होनी चाहिए, उसकी मनुहार को बस आँखों या अक्ल से ही नहीं समझा जा सकता। इसी मनुहार से वह मधुरता निर्मित होती है जो मधुरता पत्नी से नहीं मिल सकती। ऐसा कहने के पीछे पति-पत्नी के सम्बंधों की अवहेलना करने की चेष्टा नही है किंतु जो वास्तविकता है उसे हम-आप व अन्य सभी स्वयं अच्छी तरह से जानते हैं।

आगे की पंक्तियों में कुछ विशिष्ट अप्सराओं के ऐसे प्रयोग प्रस्तुत किए जा

रहं हैं जो अपने आप में छोटे दिखते हुए भी तंत्रात्मक प्रकृति के हैं। तंत्रात्मक प्रकृति के होने के कारण इनमें सफलता स्वयं सिद्ध और शीघ्र फलदायी होती ही है।

1. तिलोत्तमा अप्सरा साधना

तिलोत्तमा अप्सरा का स्थान समस्त अप्सराओं में वरिष्ठ क्रम में आता है किंतु वरिष्ठ से यहाँ तात्पर्य आयु से नहीं वरन उस दिव्यता और सौन्दर्य की पराकाष्ठा से है जिसके कारण उसकी साधना विधि को प्राप्त करना अत्यधिक दुष्कर कार्य माना गया है। उर्वशी प्रभृति शशिदेव्या, मृगाक्षी, रम्भा, में तिलोत्तमा का एक विशिष्ट स्थान रहा है तथा मुख्य रूप से यह केवल इन्द्र के दरबार में ही अपने नृत्य का कौशल प्रदर्शित करने वाली अप्सरा के रूप में, साधनात्मक ग्रंथों में वर्णित, कथित है, लेकिन वह साधक ही क्या जो चुनौती न ले सके और तंत्रात्मक प्रकृति की इस साधना को सम्पन्न करने से पूर्व यह आवश्यक है कि साधक के मन में प्रबल चुनौती का भाव हो। चुनौती के आधार पर ही सम्पन्न की गई तंत्र साधनाओं में तीव्रता से सफलता मिलती है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक के लिए आवश्यक है कि उसके पास **ताम्र पत्र पर अंकित अप्सरा यंत्र** तथा **स्फटिक माला** हो। साधक पीले वस्त्र पहन पूर्व की ओर मुख करके इस यंत्र पर केसर से ऊपर 'तिलोत्तमा' एवं उसके नीचे अपना नाम लिख कर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप सम्पन्न करे –

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं तिलोत्तमा अप्सरायै आगच्छ आगच्छ नमः ।।

मंत्र जप के पश्चात यथा सम्भव सभी साधना सामग्रियों को शीघ्रातिशीघ्र किसी स्वच्छ सरोवर अथवा नदी में विसर्जित कर दें तथा अपनी अनुभूतियों को केवल गुरुदेव के समक्ष (प्रत्यक्ष रूप से अथवा पत्र के माध्यम से) ही व्यक्त करें। इस साधना की अपने इष्ट मित्रों आदि से चर्चा न करें, इससे प्रभाव में न्यूनता आती है। यदि साधक चाहे तो आगे भी इस मंत्र की नित्य एक माला मंत्र जप सम्पन्न करता रह सकता है। इससे सिद्धि को स्थायित्व प्राप्त होता है। पौरुष प्राप्ति एवं पूर्ण गृहस्थ सुख की यह अनुपम साधना है।

2. रत्नमाला अप्सरा साधना

कोई भी अप्सरा जहाँ एक ओर से सिद्ध होने के पश्चात साधक को अपने

यौवन, सौन्दर्य से आह्लादित करती है वहीं उसे पूर्ण पौरुष देने के साथ-साथ धन-द्रव्य-आभूषण आदि से भी तृप्त करती ही है। अप्सरा के इसी धन द्रव्य दायक वरदायक प्रभाव में सर्वोत्कृष्ट नाम है रत्नमाला अप्सरा। जो अपने नाम के ही अनुरूप साधक को विविध प्रकार के द्रव्य, मणि, आभूषण एवं सौन्दर्य-विलास की सामग्रियां स्वेच्छा से उपलब्ध कराती ही रहती है। यदि इस साधना को आकस्मिक धन प्राप्ति की साधना भी कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। . . . यूं देखा जाए तो रत्नमाला की जीवन में प्रेमिका रूप में प्राप्ति स्वयं किसी क्या कोष-प्राप्ति से कम नहीं, क्योंकि उसके अंग प्रत्यंग से झलक रही होती है जो सैकड़ों मुक्ता मणियों की आभा, वह उससे साधक का तन-मन किसी क्या अपूर्व प्रकाश से भर देने में समर्थ नहीं होती है?

रत्नमाला अप्सरा साधना को किसी भी शुक्रवार अथवा सोमवार की रात्रि में सम्पन्न किया जा सकता है। इसके लिए साधक के पास **एक रत्नमुक्ता** तथा **मणिमाला** होनी आवश्यक होती है। साधक स्वयं अपनी इच्छानुसार वस्त्र पहन कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे तथा सामने किसी पात्र में रत्नमुक्ता रख, उसका पूजन इत्र, चंदन, अक्षत, पुष्प, एवं सुगंधित अगरबत्ती से करें। (चाहे तो दीपक भी लगा सकते हैं।) इसके पश्चात दत्तचित्त भाव से निम्न मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप मणिमाला से सम्पन्न करे।

मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं रत्नमाला ह्रीं श्रीं ॐ ।।

मंत्र जप के पश्चात रात्रि विश्राम साधना स्थल पर ही सम्पन्न करें। यह मात्र एक दिवसीय साधना है अत: साधक अगले दिन समस्त साधना सामग्रियों को विसर्जित कर दें तथा अपनी नित्य की जप माला से उपरोक्त मंत्र का आगे भी 21 दिन तक (रात्रि में) मंत्र जप करते रहें तो अत्युत्तम कहा गया है।

जीवन में मनोवांछित भोग, द्रव्य, ऐश्वर्य प्राप्ति के साथ-साथ यह सौन्दर्य प्राप्ति की भी श्रेष्ठ साधना है। इस साधना को साधिकाओं द्वारा सम्पन्न करने के संदर्भ में विशेष महत्व कहा गया है।

अप्सरा साधना से गृहस्थ लोग भयभीत होते हैं, डरते हैं इसलिए कि क्या अप्सरा पत्नी का स्थान ले लेगी? क्या अप्सरा से कहीं होशो, हवास में कमी रह जाएगी, क्या अप्सरा साधना करने से बदनामी तो नहीं प्राप्त हो जाएगी, ये अपूर्ण रूप से भ्रमित धारणाएं हैं। अप्सरा साधना ठीक वैसी साधना है, जैसी महालक्ष्मी साधना है। यह तो एक चैतन्य साधना है, पूर्ण साधना है क्योंकि अप्सरा आपकी पत्नी नहीं है, वह आपकी महिला मित्र मात्र है। आपके जीवन में जो भी कमियां हैं, जो भी न्यूनताएं है, उनको वह पूर्णता प्रदान करती है।

जिसने अप्सरा साधना सम्पन्न कर ली उसके जीवन में आनन्द ही आनन्द है, मस्ती ही मस्ती है, जोश है, जवानी है, चैतन्यता है, पवित्रता है और पूर्णता है। ऊंचे से ऊंचे, श्रेष्ठतम संन्यस्त व्यक्ति भी अप्सरा साधना करता है तथा प्रत्येक क्षण वह आनन्द व खुमारी में डूबा रहता है।